# तृतीय अध्याय

65- 101

## अमृतलाल नागरकी कहानियोंकी विशेषताएँ ।

## तृतीय अध्याय

क. अमृतलाल नागर की कहानियों में चित्रित विशेषताएँ ।

1. लखनवी जीवन के अगों का चित्रण
2. गांधी वाद का प्रभाव
3. भ्रष्टाचार का यथार्थ वर्णन
4. चापलूसी प्रवृथ्तत का अंकन
5. अफवाहें फैलाने की प्रवृत्ति का चित्रण
6. अंधश्रध्दा के विविध रुपों का चित्रण
7. झूठी डिंगे हॉकने की आदत का चित्रण
8. व्यंग्य के माध्यम से यथार्थ का पर्दाफाश
9. स्त्री के विविध रुपों का चित्रण
10. डाक्टरों की दयनीय स्थिति का अंकन
11. आधुनिक कालीन भक्तों की झूठी भक्ति का चित्रण
12. सामाजिक यथार्थ का चित्रण

ख अन्य विशेषताएँ

ग शिल्पगत विशेषताएँ

1. कथागत विशेषताएं
2. पात्र और चरित चित्रण
3. संवाद
4. देश काल वातावरण
5. भाषा शैली
6. उददेश्य

निष्कर्ष ।

## अमृतलाल नागर की कहानियों में चित्रित विशेषताएँ ।

अमृतलाल नागर हिन्दी साहित्य के एक जाने माने साहित्यकार हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में उन्हें अधिकतर उपन्यास कार के नाते ही जाना जाता है परंतु उन्होंने कहानी साहित्य में । अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है । अलग ढंगकी कहानियां लिखकर कहानी साहित्य के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देनेवाले अमृतलाल नागरजी की कहानियाँ अपने आप में अनुठी हैं । कई उपन्यासो के रचना के बाद जब उन्होंने कहानी साहित्य के क्षेत्रमें अपना कदम रखा तो यह क्षेत्र भी उन्हें सफलता के एक छोर तक पहुँचा गया । अबतक उनके जितने कहानी संग्रह उपलब्ध होतेहै उनमें से 'सिकंदर हार गया' और 'नवाबी मनसद' येदो ही कहानी संग्रह समीक्षकों की गिरफ्त में आ चुके हैं । इनमें से कई कहानियों की समीक्षा, समीक्षकों ने की है कई विशेषताएँ होने के बावजून भी दुर्भाग्य से इनकी कहानियों की उतनी पूछ न हुई जितनी होनी चाहिए थी ।

अमृतलाल नागर जी के कहानी साहित्य को परखने के लिए हमें जानना बहुत ही आवश्यक हो जाता है कि नागरजी की कहानियों की विशेषताएं क्या हैं ? उनके कहानी साहित्य का हम तभी सही सही मूल्यांकन कर सकते हैं जब हम यह जान ले कि ऐसी कौन सी विशेषताएं उनके कहानी साहित्य में चित्रित हैं कहानियों के समग्र अध्ययन के बाद हम उनकी कहानियों मे निम्नलिखित विशेषताएं देख सकते हैं । --

### लखनवी जीवन के विविध अंगोंका चित्रण :—

अमृतलाल नागरजी का जन्म लखनऊ में हुआ था । वही पर वे पले

बढ़े और वही के जीवन के अनुभवों को लेकर उन्होंने साहित्य सृजन किया । जिस प्रकार एक संवेदनशील साहित्यकार जिस परिवेश में पला हो, जिन परिस्थितियोंका उसने सामना किया है, उसके कटुतिक्त अनुभवों को हमारे सामने प्रस्तुत करता है, उसी प्रकार अमृतलाल नागरने बचपन से ही लखनऊ के वातावरण को अनुभव किया है, वहाँ के सांस्कृतिक रीति-रिवाजों को रुढ़ी परम्पराओं को जाना है और उन्हीं को पाठकों के सम्मुख पेश किया है । स्वयं अमृतलाल नागरजीने देवेंद्र चौबे जी को यह बात बतायी है । उनका कहना है -- "शुरु के तीन महिनों को छोड़कर मैंने पूरा जीवन लखनऊ में बिताया है । साथी संग, वातावरण यही मिला । सबसे अधिक गदर 1857 की बाते यही से सुनने को मिली । तब ऐसे लोग यहां थे, जिनके जीवन में 1857 की घटना घटी थी । फिर लखनऊ में भटका खूब, घूमा खूब । खासकर पुराने लखनऊ में 15, 16 वर्ष से घुमाई शुरु हुई । 1940 के बाद कुछ वर्ष बम्बई में गुजरे । बाकी सारा समय यही बीता ।"[1] शायद इसी घुमक्कडी वृत्तिने उन्हे लखनऊ शहर के चप्पैं चप्पैं की जानकारी दी और पूरा लखनवी माहौल उनकी कहानियों में उतर आया ।

लखनऊ के धार्मिक जीवन का एक अंग होने वाले पर्व, त्यौहार, मेंले वहां के लोकगीत, वहां के रीति रिवाज, परम्पराएँ, वहां के लोगों की वेशभूषा, उनके मनोरंजन के साधन, खान पान के नियम, उनकी बोलचाल, उनके जीवन के हर अंग को अमृतलाल नागरजी ने चित्रित किया है । उनके द्वारा किये गये नवाबी जीवन के वर्णन उनके चेलों के वर्णन से ऐसा महसूस होता है कि मानो वह समां फिर से हमारे सामने प्रस्तुत हो गया हो । उनका लखनऊ के बारे मे इतना ही प्रेम है कि उन्होंने अपने एक कहानी संग्रह का नाम ' हम फिदा ए लखनऊ' रखा है । उनके नवाबी

मसनद' कहानी संग्रह में भी पूरा लखनवी माहौल दिखाई देता है । देवेंद्र चौबे लिखते हैं, "नवाबी मसनद में नवाब की दयापर पलनेवाले दो कारिन्दे जब आपस में बातचीत करते हैं तो सन 1936 का सामाजिक और राजनीतिक परिवेश सजीव होकर हमारे उपस्थित सामने हो जाता है ।"[2]

देवेंद्र चौबेजीने जो लिखा है वह बिल्कुल सही प्रतीत होता है । : रामजानी ने जोर देकर कहा -- "अब ये सोराज नही है तोक्या है, भाईजान ? सौराज न होता तो क्या ये लोग हुकूमत कर सकते थे ? ये सब टिकस जो बढ़ रहे हैं सब सौराज के बाद ही हुए हैं । आप ही बताइए पहले था सनीमा का टिक्स ? सैकलपर देख लीजिए, सालभर में तीन-साढ़े तीन रूपये दे दिये, चलिए साहब छुट्टी हो गयी । पीरू ने लंबी सांस घासीटकर कहा - पहले की क्या बात थी मियाँ चार आने का टिक्स, दो पैसे की बीडियाँ पूरा तमाशा देख लीजिए जी भरके अब में दो पैसे सो टिक्स में धसजाते है । ----- अमाँ भई, बडे लोग सच कहते है कि राज मल्का टुरिया का था ।"[3]

इस प्रकार हम देख सकते हैं, कि लखनऊ के आम आदमी के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश का सही-सही अंकन करने मे अमृतलाल नागर जी सफल दिखाई देते हैं ।

गांधीवाद का प्रभाव :-

अमृतलाल नागरजी ने अपने साहित्य में जो मानवतावादी विचार व्यक्त किये हैं उन्हें देखकर हम यह बात आसानीसे कह सकते हैं, कि उनपर गांधीवाद का गहरा प्रभाव पड चुका था । गांधीवादी विचारधारा तो उनकी कहानियों मे यथा-तथा दिखाई देती है । जिस माहौल को उन्होंने स्वयं देखा, भोगा उसी का वर्णन करते हुए आज ए इस विचारधारा की क्या स्थिति हो चुकी है और आज गांधीजी को युवा पीढ़ी किस नजर

से देखती है, यह बात अमृतलाल जीने अपनी कहानियों में उतारी है । अमृतलाल नगरजीकी कहानी ' एक था गांधी ' जी की विचारधारा का आज कैसे गलत इस्ते माल किया जाता है, यह दिखाई देता है -

" गांधी बोला, मैं ऐसा न्याय नहीं मानता । मैं पत्थर का ठाकुर नही बनूँगा ।

दुनियाने देखा गांधी यूँ नही रिझेगा तब उसने अपनी बात चलायी । अधरम की कालिख अपने मुँहपर धरम का पाऊडर मलकर गांधी को गोली मार गयी । पुरब का सूरज इस बारमें ही डूब गया । गाँधी मरगया तो गांधी के मंदिर बनने लगे । दुनिया उसे पत्थर का ठाकुर बनाकर न्याय की सच्ची आवाज बंद करने लगी । और अपने अन्याय को न्याय कहकर खोटा सिक्का चलाने लगी ।"[4]

इसके साथ-ही-साथ उनकी मानवतावाद को जागृत करनेवाली अन्य कहानियों में ' 14 एप्रिल ,' ' आदमी नही । नही ।।,' जय पराजय ' आदि कहानियां मी महत्वपूर्ण हैं ।

भष्टाचार का यथार्थ वर्णन :-

आधुनिक काल में समाज को भ्रष्टाचार की भीषण बिमारीने ग्रस लिया है सामान्य से सामान्य आदमी से लेकर बड़े से बड़ा राजनेता, बड़े-बड़े धार्मिक अधिकार रखनेवाले पंडित, बड़े-बड़े तत्वनिष्ठ, सभी आज भ्रष्ट हो चुके हैं । राजनिती को तो भ्रष्टाचार का दूसरा पर्यायी रुपमाना जाता है । शिक्षा क्षेत्र जैसा ज्ञानदान का पवित्र कार्य करनेवाला क्षेत्र भी आज पूरी तरह से भ्रष्ट को चुका है । इन्सान अपनी इन्सानियत खोता जा रहा हैं । सामान्य से सामान्य क्लर्क भी क्यों न हो एकाध कागज के लिए तंग करता है । उसपर कुछ वजन रखे बगैर काम करने के लिए तैयार नहीं होता ।

इस भ्रष्टाचार रुपी कलंक ने समाज को खोखला कर दिया है । धार्मिक क्षेत्र में तो इस कदर भ्रष्टाचार फैल गया है किमानो ये पंडित ईश्वरतक पहुँचानेवाले दलाल लगने लगते हैं । आज स्थिती यह हो गयी है कि समाज का कोई भी ऐसा हिस्सा शेष नहीं रहा है कि जहाँ भ्रष्टाचार न चल रहा हो । अमृतलाल नागरने ने इस सामाजिक बुराई का वर्णन करते हुए इन पर तीखा व्यंग्य किया है । चाहे राजनीति हो, चाहे शरीफ (याने आप को शरीफ़ कहनेवाले लोग) हो, चाहे फौजी हो, चाहे लेखक हो सभी इस भ्रष्टाचार रुपी बिमारी से किस प्रकार ग्रस्त हैं, यह दिखानेवाली अमृतलाल नागर जी की कहानी ' आदमी नहीं । नहीं । । में मनुष्यकी अपनी मनावता किस प्रकार खो रही है यह दिखाया है । इसके साथ ही अगर कई वर्षो के पश्चात मनुष्य आज की मनुष्य जाति का उत्खनन करेंगा तो उसे क्या मिलेंगा इस बात का भी सही - सही अंकन अमृतलाल नागरजीने अपनी कहानी ' क्लर्क ऋषी का शाप ' में किया हैं और भ्रष्टाचार के यथार्थ रुपपर व्यंग्य कसा है ।

**चापलूसी प्रवृत्ति का अंकन :-**

आधुनिक काल में जिस प्रकार किसी काम को कराने के लिए मनुष्य किसी न किसी व्यक्ति की खुशामद करता है, अपनी गलती छिपाने के लिए भी खुशामद की जाती हैं यही प्रवृत्ति प्राचीन काल से चली आ रही हैं । अपनी चोरीछिपाने के लिए कृष्णा ने माता यशोदा की खुशामद की थी, यह तो सभी जानते हैं । उसी प्रकार आधुनिक काल तक यह प्रवृत्ति चली आ रही हैं । जब सामन्त युग आ गया था, तब तो चापलूसी कर अपना घर भरने की वृत्ति लोगों में अधिक आने लगी । आज दुनिया में बहुत से लोग स्वार्थी बन चुके हैं । स्वार्थ के बारे में नागरजी कहते हैं, --"स्वार्थ के पीछे

सारी सृष्टी तबाह हुई जा रही है । किंतु यह स्वार्थ है क्या ? और क्यों है ? अपने आस्तित्व की चेतना को मनुष्य सर्वव्यापी और सामूहिक रुपमें क्यों नही देखता ? सृष्टिमें असम्पृक्त रहकर में अपनी वास्तविकता का अनुभव क्यों कर सकता है । सम्मिलित रुपसे समाज की प्रत्येक क्रिया प्रतिक्रिया का प्रभाव मुझपर पडता है और मुझे चैतन्य बनाता है । मैं अपने हर अच्छे और बुरे काम का निर्णय समाज के तराजू पर ही करता हूँ ।"[5] कवि साहित्यकार की अपेक्षा चारण अधिक थे । राजाओं को खुश कर उनसे उपाधियाँ हासिल करना यही उनका हेतू था । जैसे जैसे मुसलमान और नवाबों का समय आता गया तब तो यह और अधिक बढ़ती गयी । यहां तक कि उन चापलूसोंने अपने राजाओं का ध्यान अन्य चीजों में लगया और उनसे पैसे, पद ऐंठ लिये ।

अमृतलाल नागरजी की कहानियों में नवाबी जीवन का वर्णन आया है, जाहिर है उनकी कहानियों में चापलूसी प्रवृत्ति का अंकन भी हैं । नवाब के कारिन्दें नवाब की खुशामद कर उनसे पैसे ऐंठते हैं इस बात से उन कारिन्दों की बीवियां भी खुश हैं । उनकी 'सूरज में छेद हो गया' कहानी इसी तथ्य को उद्घाटित करती है ।

" ऐसे ही । एक बात दिमाग में आई की नवाब साहब से कुछ रुपया ऐंठा जा सकता है। रमजानी ने कहा । दरवाजे के पीछे ही कादिर की बीबी हुई सब बाते सुन रही थी। । फौरन ही एक तश्तरी में पुलावा रखकर लड़के के हाथ बाहर भेजा ।"[6] जैसे ही इन कारिन्दो को पता चलता है कि नवाब साहब के लड़का पैदा हुआ है तो "आज सुबहू 6 बजे बेगम साहिबा के लडका हुआ है । बी अब्बासी ने फरमाया । अमा हां, हमरी कसम खावो तुम्हारी कसब बी अब्बासी ने लहजे के साथ कहा ।" [7]

भई मान गए तुम्हें । आज तो अल्ला कसम पुलावा की पेल्टोंपर हाथ साफ होंगे । बला, सममुच तबीयत खुश कर दी इस दम तुमने ।

आधुनिक काल के विद्यार्थी भी किस प्रकार चापलूसी करते हैं यह दिखानेवाली अमृतलाल नागरजी की कहानी 'आदमी नहीं । नहीं ।' चापलूसी की प्रवृत्तिपर तीखा व्यंग करती है । इसमें सब कॉलेज के युवकों को यह पता चलता है कि यह साक्रेटिक याने सुकरात है तो ये विद्यार्थी उनके लिये कुर्सी, चाय नाश्ते का प्रबंध कर लेते हैं, लेकिन उसके पहले ही उन्होंने सुकरात को सामान्य आदमी समझकर ठुकरा दिया था ।

इस प्रकार चापलूसी करके अपना स्वार्थ साधनेवाले आधुनिक काल के लोगोंका सही अंकन कर अमृतलाल नागरजी व्यंग्य का उदघाटन इन कहानियों में किया है ।

**अफवाहें फैलाने की प्रवृत्ति का चित्रण :-**

आधुनिक का में समाज में लोग जरा जरा सी बात को लेकर डरते रहते हैं क्योंकि वक्त ही ऐसा आ चुका है कि, कहां क्या घटित हो जाएगा इस बातका पता नही चलता । सुबह अखबार पढते समय हम देखते हैं कि खून, बमविस्फोट, आतंकवाद, बलात्कार, आगजनी आदि घटनाओं से ही समाचार पत्र रंगा होता है । इन सब को पढ़कर सामान्य आदमी यह सोचने पर मजबूर हो जाता है कि इन हालातो में कैसे जिया जाए । उसपर स्थिती तब और भी बदतर हो जाती है कि अफवाहें फैलानेवाले लोग झूठीं खबरें बताकर सामान्य आदमी का जीवन और भी अधिक संत्रस्त कर देते हैं । यह अफवाहें पानेवाले लोग हमारे गलियों भी होते हैं । किसी बूढ़ी औरत

को अगर कुछ गलत दिखाई दे तो वह उस पूरे परिवार के बारे में गलत तरह की अफवाहें फैलाती है और इससे कभी कभी झगड़े भी होते हैं । कई बार समाजमें फैली गलत अफवाहों की वजह से समाज का काफी नुकसान भी हो सकता है ।

अमृतलाल नागरजी ने भी ऐसी ही अफवाहें फैलाने वाले लोगों की स्थिति को चित्रित किया है । एक मुहल्ले में होनेवाली एक बूढ़ी जब कोई अफवाहें फैलाती है तो वहाँ कैसे झगड़े होते हैं, इस बात का चित्रण अमृतलाल नागरजी ने 'मुल्लर की महतारी' में किया है --"बात गर्मा गर्मी पर आ गई । सर्वेश्वरी और उनकी सास दोनों ही लड़ने की कला से अनभिज्ञ होने के कारण मात खा गई । सालिगराम की बहन और पत्नी का तेहा चढता ही गया । घंटो की झख झख के बाद उन दोनों को शान्त कर सर्वेश्वरी पूरी बात समझा पाई कि बात मुल्लर की महतारीने उड़ाई है और वे लोग तो स्वयं परेशान हो रहे थे ।"[8]

बम्बई शहर में जब जब बम गिरने की अफवाह उठती है, तब लोगों की क्या स्थिति हो गयी थी इस बात का वर्णन , अमृतलाल नागरजीने '14 एप्रिल' कहानी में किया है -- "अफवाहें घरों में घर कर गई थी । बम्बई के घरों में औरतें अपने बच्चों और घरवाली राजी-खुशी जानने के लिए बेकी के बालकनी, खिडकियों, दरवाजों और गली सड़को में लदी हुई थी ।"[9] अमृतलाल जी की 'एक और कहानी' 'शहर का अंदेशा' भी अफवाहों को चित्रित करती हैं । इस प्रकार अफवाहों को चित्रित करनेवाली कहानियों मे 'दफिने की खुदाई', 'जन्तर मंतर' ये भी कहानियां संकलित हुई हैं ।

इसप्रकार अफवाहों की वह स्थिति कितनी बदतर हो जाती है इस बात का वर्णन अमृताल नागरजीने किया है । इन अफवाह फैलानेवाले लोगों को उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यमसे सचेत किया है ।

अंधश्रध्दा के विविध रुपों का चित्रण :-

आधुनिक काल में हम कितने भी पढ़ लिख जाए, विज्ञान का युग भले ही आाए और हम 21 वी सदी की ओर भले ही बढ जाए, आज भी हम पूरी तरह से अंधश्रध्दा ओंको छोड़ नही सके हैं । आज कितना भी पढ़ा लिखा आदमी क्यो नहो, राह चलते अगर बिली रास्ता काट जाए तो तीनचार कदम पीछे हट जाता है । काम पूरा न होगा यह सोचकर व्यथित हो जाता है । रास्ते में कही भी किसी पत्थर को केसरिया रंग लगा देखाले तो उसको आदमी झुककर नमस्कार करता है, उसे भगवान समझता है । मनुष्य को कहीं न कहीं श्रध्दा रखनी चाहिए परंतु वह अंधश्रध्दा नही होनी चाहिए । आजइन्सान इस अंधश्रध्दा के छांव रहकर इन्सानियत भूलता जा रहा है ।

अमृताल नागरजी ने अंधश्रध्दा के विविध रुपों को दिखया है । पंडित लोग, तंत्र मंत्र करनेवालेफकीर, औलियां किस प्रकार पैसा लेकर ढगाते है इस बात का चित्रण नागरजीने किया है । कई बार मनुष्य को किसी अदृश्य शक्ति के द्वारा मन के संकेत मिलते हैं और वह खिंचती चली आती है । इस बात का चित्रण नागरजीने अपनी कहानी 'मन के संकेत' में किया है -- " राजाकिशोर बाबू रात भर ठीक तरह से सो न सके । यह कैसे संभव है, क्या जीव का आकर्षण जीव को इस तरह से भी अपनी ओर खींच सकता है ? फिर बच्चे की बीमारी भी स्वयं डाक्टर

तक के लिए आश्चर्य जनक थी । क्या माता पिता के सकंट की छाया स्वयं पुत्र पर पडी थी, रोहिणी को निश्चित मन संकेत देने के लिए बच्चे का ज्वर किसीप्रकार माध्यम बना था ? ..... यदि भुक्त भोगी न होते तो राज किशोर बाबू ऐसे चमत्कार पर विश्वास न कर पाते ।"[10]

आधुनिक काल में भिखारी भी किस प्रकार धर्म की आड़में पैसे लेते है, इस बात को अमृतलाल नागरजीने अपनी 'बंगालीवैष्णव' कहानी में चित्रित किया है। ।"वह एक बंगाली वैष्णव था किर्तनिया । मेरे पहनावे और आकृति से लोगों को अक्सर मेरे बंगाली होने का भ्रम हो जाया करता है । उसने भी यह समझा मुझे देखते ही उसके अकार, ओकार में बदल हो गये। होरे रामा, होरे रामा, कृष्णो कृष्णो, होरे होरे ।"[11]

अमृतलाल नागरजी की 'सिकंदर हार गया' इस संग्रह की एक और कहानी 'मरघट के कुत्ते' धार्मिक विकृति को दिखाती है । श्मशान में जलाये जानेवाले प्रेत को जलाने का अधिकार किसे है, इस बात का विवाद करते करते लाश वही पडी भीग रहती है । अमृतलाल नागरजी की 'पीपल की परी' इस कहानी में लोगों का भूत प्रेत में विश्वास और उसके प्रति अंधश्रध्दाएँ देखने को मिलती हैं । इसी बात का फायदा कुछ लोग कैसे उठाते हैं इस बातको उन्होंने चित्रित किया है । ढोंगी साधु लोग ताविज, मंत्र-तंत्र आदि की बात पैसे ऐंढकर लोगों को घर के नीचे खुदे खजाने को बताने की किस प्रकार कोशिश करते हैं इस बात का वर्णन नागरजी की 'दफीने की खुदाई' इस कहानी में आया है ।

आज भी जिन रस्मों का पालन अंधश्रध्दा के कारण सारे समाजमें

किया जाता है, उसका क्या परिणाम होता है इस बात का चित्रण नागरजीने अपनी कहानी 'भतीजी की ससुराल' में किया है । कहानी का नायक अपनी भतीजी को छोडने जाता हे, जहाँपर कुछ न खाने की हिदायत दी जाती है । लेकिन एक दिन की जगह उसे तीन दिन रुकना पड जाता है और वहांपर कुछ न खाने की वजह से उसकी स्थिति दयनीय हो जाती है । भूखके मारे बेहाल हो जाते हैं । ऐसी रस्में निभाने से फायदा ही क्या है ? अमृतलाल नागरजी की एक और कहानी 'जंतर मंतर' में भी इस प्रकार की अंध श्रध्दाएं दिखा दी है । नागरजी की 'कयामत का दिन' इस कहानी में किस प्रकार अंधविश्वास और रुढियां मनुष्य को मूर्ख और बदहवास बना देती है इसका चित्रण किया है " कादिर मियां ने स्वप्न में खुदा का संदेश सुना और पीले वस्त्र पहनकर सबको संदेश सुनाने चल दिया ।मुहल्ले पडोस वालों ने समझा वह घर त्यागकर फकीर बन गया है और बात का बतंगड बन गया । पुरुषों ने उसे घर लौट चलने के लिए आग्रह करना शुरु किया और स्त्रियोंने कादिर की पत्नी को कोसना आरम्भ किया जिससे लड़झगड़ कर पति को घर त्यागने के लिए विवश किया ।

'जन्तर मन्तर' कहानी में आदमी का भूत प्रेत उतारने के लिए जंतर मंतर का सहारा लेना, साथ ही मनुष्य से झूठ या सच उगालने के लिए मंत्र तंत्र की सहाय्यता लेना आदि बातें मनुष्य की किस प्रकार अंधश्रध्दा प्रकट करती हैं, इसी बातका वर्णन उन्होंने किया है ।

इस प्रकार अंधश्रध्दा के विविध रुपों को दिखलाते हुए मनुष्य की अंधश्रध्दाओंका फायदा लोग कैसे उठाते है इसी बात को अमृतलाल नागरजीने अपनी कहानियें के माध्यमसे दिखाने का प्रयास किया है ।

**झूठी डिंगे हाँकने की आदत का चित्रण :-**

आज कल जिस प्रकार निम्नमध्य वर्ग के लोग अपने आपको उच्च मध्यवर्ग का व्यक्ति साबित करने की कोशिश में लगे रहते हैं और कुछ मध्यवर्ग के लोग अपने आपको उच्चवर्ग का साबित करनेकी कोशिश में लगे रहते हैं। उसी प्रकार कुछ लोग अपनी झूठी शान दिखाने के लिए झूठी डिंगे हाकते रहते हैं । इन झूठी डिंगे हाकने वाले लोगों की पोल कभी न कभी खुल ही जाती है । उनकी पोल खुल जाने के बाद तो वे बदनाम हो जाते हैं ।उनकी यही आदत उन्हें समाजमें ठीक से जीने लायक नही रखती । लोग उनकी ओर एक अलग ही नजरसे देखने लगते हैं ।

अमृतलाल नागरजी ने ऐसी कई व्यक्तिरेखाओंका चित्रण किया है, जो झूठी डिगें हांकने मे माहिर हैं । जैसे उनकी नवाब साहब कहानी के नायक नवाब साहब, जो असली नही है, झूठी शान का वर्णन करते हैं लेकिन जब उनकी पोल खुल जाती है -- नवाब साहब ने झल्लाकर फर्माया " अबे चुप, अम्मीजान का बच्चा कहीं का ! मैं क्या कोई तेरा सचमुच का बाप हूं ? एका एक घरसे एक तेज आवाज सुनाई पडी ' ऐ मैं कहे देती हूँ, जो तुम मुझे इस तरह से कोसोगे तो अच्छा न होगा । ऐ-हां, ये तुम्हारे लडके नही हैं तो कही गैब से आए हैं ? नवाब साहब खड़े खड़े गुस्से से कांप रहे थे, कि अन्दर से रोते हुए बेगम ने फरमाया, उई मेरे अल्लाह, तुमने मुझे कैसी आफत मेंफंसा दिया । तीन तीन दिन से फकि करो और ऊपर से ये गालियां .... ।" [12]

अमृतलाल नागरजी की कहानी 'हमारे पडौसी मुशी बख्तावरलाल' भी इसी प्रकार की झूठी डिंगे हाक ने वाले व्यक्ति की कहानी है, मुशी बख्तावरलाल हमेशा बताते कि उनके हुस्न की कई लडकियां दीवानी थी । उन्हीं के शब्दों में "जिधर से मैं निकल जाता; हुस्न के बाजार में आहें भरी जाने लगती थी ।"[13] उन्हीं की वजह से (उन सुंदरियों की) उन्हीं के द्वारा घसीटकर ले जाने के कारण 1957 का स्वतंत्रता संग्राम सफल नहीं हो सका । लेकिन उनकी इसी डिंगे हाकने की आदत की वजह से उन्हें जेलजाना पडा ।

इसी प्रकार आजकल उच्च वर्गीय लोगों की तरह टी-पार्टी का आयोजन, क्लब में जाना आदि का अनुसरण मध्यवर्ग में होने लगा है । झूठी शान दिखाने के लिए बेवजह पैसा पानी में बहाया जाता है, जो कि उनकी आर्थिक स्थिति कमजोर कर देता है । अमृतलाल नागरजी ऐसी ही प्रवृत्ति वाली स्त्री का चित्रण करते हैं, जो उच्चवर्गीय लोगों की तरह टी पार्टी का आयेाजन कर, उसके लिए सोफासेट वगैराह खरीदकर लाती है । और उसका पति उसे डोल कहकर नहीं पुकारता इसलिए नाराज हो जाती है ।

अपनी चीजें भी किसी प्राचीन व्यक्ति की अमानत है, यह बताकर उसका महत्व और साथ ही अपना महत्व बढाने की जो प्रवृत्ति मनुष्य में होती है उसका चित्रण अमृतलाल नागरजी ने 'लंगूर का बच्चा' और 'लार्ड लिलनिटागो का रेडिओ' इन कहानियोंमें दिखाया हे । 'लंगूर का बच्चा' कहानी में हमने पाले पशु किस प्रकार बड़े महत्वपूर्ण है, इस बातको चित्रित किया है, स्वयं नायक भी अपने लंगूर का महत्व बढ़ाने के लिए बहुत सारी डिंगे हांकता है परंतू बाद में उसे सब कोसते हैं । उस प्रकार 'लार्ड लिलनिथगो को रेडियो' में भी अपने रेडिओ का महत्व बढ़ाने

के लिए डिंगे हांकी जाती है परंतु जैसे ही महत्वपूर्ण मौका आता है, वह रेडिओ बंद पड़ जाता है और उनकी पोल . खुल जाती है ।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि झूठी डिगें हांकने वालो की या झूठी शान को दिखानेवालो की पोल कभी न कभी खुल ही जाती है । आदमी को बडा बनने की ख्वाईश आदमी से क्या करवा लेगी इसका पता नही है । अमृतलाल नागर की कहानी भारतपु नौरंगीलाल इसमें इसी प्रकार की इच्छा रखकर मुख्य मंत्रीजी के पास चला जाता है । वहां उनसे भारतरत्न दिवाने के लिए प्रार्थना करता है । जब वे इन्कार करते है --

" इस पर नौरंगीलाल का खून खौल उठा, कुरसी से उठते हुए बोले महाराज मैं तो सिध्दान्तवादी आदमी हूं । जब मैंने महापुर्स बनने की ठान ली है तो अवस्स अवस्स बनूंगा । सरकार यों पदवी न देगी तो जन्ता के जोर से लूंगा, आपके हाथसे लूंगा । ये कहके घर आये और अपने मुसाहबों को बुलाके पूछा कि अब क्या करना चाहिए । वसंत और पुरुषार्थी जब काई सुझाव न दे सके तो वे मेरे पास आए। । सब हाल सुनकार बोलें चौबेजी अब तो इज्जत का सवाल है, मुझे महापुर्स बनना ही पडेगा । मैने कहा,'इसमे क्या कठिनाई है'? हगर उन्होंने भारतरत्न नही बनाया तो आप भारतपुत्र बन जाइए । रत्न तो खजाने में बंद पड़े रहते है और पुत्र सदा माता के पास रहता है ।" [14] इतना सुनकर वे खुश हुए और उन्होंने भारत माता की एक मूर्ति बनायी और उसके कदमों के पास अपन मूर्ति बनाकर उसे भारतपुत्र नाम दिया और इसमूर्ति का अनावर मुख्यमंत्री से हीं कराया ।

इस प्रकार झूठी डिंगे हांकने वाले कभी कभी अपनी बात मनवाने के लिए कुछ भी कर गुजरते हैं । लेकिन उनका कभी न कभी पर्दाफाश तो होता ही है ।

**व्यंग्य के माध्यम से यथार्थ का पर्दाफाश :-**

व्यंग्य का सबसे मूल और महत्वपूर्ण उददेश्य यह होता है कि व्यंग्य के माध्यम से तीखी चोट की जाती है । परंतू उसमें भी वह सीधी चोंट नही करता । हास्य के माध्यम से उसे प्रस्तुत किया जाता है । डा. सुरेश सिनहा के अनुसार " नागर की कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है व्यंग्य शैली है । सामाजिक विसंगतियों एवं विकृतियों पर वे ऐसे मर्मान्तक व्यंग्य अपनी पैनी शैली में कसते हैं, कि उनका लक्ष्य तीव्रतर रुप में अभिव्यक्त होता है ।"[15] व्यंग्य समझने के लिए लोंगों को देर तो लगती है, परंतु जब उसका अर्थ समझ में आ जाता है तो वैसी गलती वह इन्सान नही कर सकता । इसी वजह से साहित्यकार समाज की बुराईयो का चित्रण करने के लिए व्यंग्य का सहारा लेता है ।

अमृतलाल नागरजी भी इसके लिए अपवाद न रहें । उन्होंने भी अपनी कई कहानियों में व्यंग्य को माध्यम बनाकर कुछ बुराईयों का पर्दाफाश किया है । जैसे आजकल भारतीय संस्कृति क्या है, यह किसी को पता नही है । भारतीय संस्कृति का विश्लेषण करते वक्त बाल की खाल निकलने वाले एक बडे बाबू भारतीय संस्कृति को किस प्रकार चित्रित करते हैं, इसका वर्णन अमृतलाल नागरजीने 'गोबरु और गुबरैले' कहानी में किया है -- " तब ले ये भारती संसकिरती की बात हो गई है, न पंडज्जी घर में गणेश जी और घरके द्वारे पे लौंड इस्पीकर माने हंड्रेड पर सेंड इंडियन कल्चर ।

'ठिक है बडें बाबू ।

" हिजड़े ब्याह कारज के बाद घर में और नचाना भी भारती संसकिरती है । इसके माने ये भए कि दाये लौडे इस्पीकर, बायेहि जड़े और बीच में सिरी गणे-नमोनमः । दैट इज अवर इंडियन कल्चर ।" [16]

भारतीय संस्कतिपर व्यंग्य करते हुए उन्होंने आगे यह भी कहा है कि दोनों और इन दोनों के आ जाने की वह से ही शायद गणेश जीने रिध्दी सिध्दी को तलाख दे दिया है । अमृतलाल नागरजीने 'राष्ट्रीकरण' शब्द को फोडते हुए उसका विश्लेषण 'राम हिष्ट्री का रण' किया और उसका अर्थ अपने पात्र के द्वारा उन्होंने 'राम हिष्ट्री का रणः राष्ट्रीयकरण' नामक कहानी में दिया है,—" सीधा ख्याल है पंडज्जी राम की हिष्ट्री में जिनके साथ जुध्द का बडनन आता है उसके साथ रण लडना ही राम की भक्ति है । मारो, इन रावणों , कंसो की औलादों को ।" [17]

विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अमृतलाल नागरजी के सिकंदर हार गया कहानी संग्रह में आये व्यंग्य का वर्णन करते हुए लिखा है " प्रस्तुत संग्रह की 'सती का दूसरा ब्याह' और 'एक था गांधी' जैसे कहानियों में रुढियों और पाखंडोपर व्यंज. करते हुए लेखक ने अपनी इसी दृष्टि का परिचय दिया है ।"[18]

एक ओर तो हम कहते हैं कि हमारा देश एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र हैं, और दूसरी ओर हम धार्मिक मतभेदों की वजह से आपस में लड़ते हैं । इसी संघर्ष के बीच हम अपनी इन्सानियत खोते जा रहे हैं, इस अधर्म यथार्थ का पर्दाफाश 'आदमी नही! नही!' कहानी में हुआ है । सुकरात उनके लडाई का कारण पूछने जब जाते है तो वे कहते हैं,—"नहीं नहीं, खेत दुश्मन के हैं । खेत जलाओ, खेत जलाओ, । हमें अक्लमत सिखाओ । अक्ल हमे आदमी बना देगी हम हिन्दु है । हम सिरब हैं । हम मुसलमान हैं । हम आदमी नही ! नही !! नही !!!," [19]

अमृतलाल नागरजी ने छोटी छोटी घटनाओं से भी समाज के लोगों की प्रवृत्तियों का पर्दाफाश किया है । आज कल यह एक मानो फैशन ही हो गया है जानवर पालना । इसी बात का आधार बनाकर उन्होंने अपने 'लंगूर के बच्चे' का महत्व बढा चढाकर वर्णित करते हुए लोगों की इस ढोंगी स्वार्थवृत्ति पर व्यंग्य किया है । अपनी चीजों का बढ़ा चढाकर वर्णन करने की प्रवृत्तिपर भी व्यंग्य किया है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमृतलाल नागर ने कई कहानियों में व्यंग्य के माध्यम से यथार्थ का अंकन किया है ।

**स्त्री के विविध रुपों का चित्रण :-**

आत तक स्त्री को पूरी तरह से कोई नही जान सका है । एक स्त्री अगर चाहे तो घर बसाकर सुख प्रदान कर सकती है और वही स्त्री कभी कभी दुर्गा बनकर पूरे घर को बरबाद कर सकती है । स्त्री के अलग अलग रुप भी होते है। । वह किसी की बेटी, किसी की प्रेमिका । , किसी की माँ, किसी की बहन होती है ।सभी रिश्तों का एक साथ ठीक निर्वाह करनेवाली स्त्री को कई तरह की परेशानियाँ समा देता है । डाक्टर घनश्याम भुतडा का मंतव्य है की, --"प्राचीन भारतीय साहित्य एवं आदि मध्यकालीन हिन्दी कहानी के अंन्तर्गत नारी चित्रण के विविध रुपों के विवेचन के आधारपर यह कहा जा सकता है कि परिस्थितियोंके अनुसार ही नारी की स्थिति परिवर्तित होती रही है ।"[20] अमृतलाल नागरजीने स्त्री के विविध रुपोंका चित्रण किया है ।

अमृतलाल नागरजी की एक कहानी 'बनफशा बेगम के नूरे नजर में स्त्रीका जिद्दी रुप दिखाई देता है । अपनी जिद को पूरी करने के लिए वह अपने बेटे को जवान हो जाने के बावजूद भी पूरी जिंदगी का दर्शन नहीं होने देती है, उसे महलों में ही कैद कर रखती है । इसके परिणाम स्वरुप उसे बादमें कई कठिनाईयों का सामना करना पडता है । वैदिक काल से ही स्त्री को अबला समझा जाता रहा है और पुरुष उसपर अपना अधिपत्य जमाता रहा है । आधुनिक काल में चाहे स्त्री कितनी ही पढी लिखी, नौकरी पेशा क्यो न हो उसे भी पुरुष का अधिपत्य सहना ही पडता है । आज स्थिति यह हो गयी हे कि शक्की मिजाज का स्वयं भ्रष्ट होनेवाला पति भी अपनी पत्नी में सीता चाहता है । स्त्री को बंदी बनाकर रखता है । आधुनिक काल की स्त्री विद्रोह कर अपने उपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार की फिर्याद कर तो सकती है परंतु जब अमृतलाल नागरजी लिखते थे, तो ऐसी स्थिति नही थी ।अनपढ़ स्त्री अगर व्रिदोह कना चाहे भी तो उसके विद्रोह को दबा दिया जाता था । ऐसी भी कुछ स्त्रियों के रुपों को अमृतलाल नागरजीने अपनी कहानियों में चित्रित किया है ।

'सिकंदर हार गया' कहानी में पति अपनी पत्नी को बंदी बनाकर रखता है, उसके बंदीगृह से वह भाग तो जाना चाहती है परंतु वह भाग नही पाती लेकिन 'सती का दूसरा ब्याह' कहानी में जब डाक्टरनी का पति उसके बारे में गंदी गंदी बाते मंच पर आकर उसके अस्पताल के सामने ही करने लगता है तो वह सह नही पाती और अपने पति के अन्याय, अत्याचार को जनता के सामने खोल देती है ।

पुरुष अपनी प्यास को बुझाने के लिए स्त्री को एक इस्तमाल की चीज के समान उसका उपयोग करता है और बादमें उसे छोड़ देता है । पुरुष का यह स्त्री लालच उसे कहाँ से कहां ले जाता है । कई बार तो स्त्री ऐसे पुरुष के चंगुल से बाहर निकालने के लिए कई प्रयास करती है । ऐसी ही एक स्त्री 'पीपल की परी' की नायिका है जो बाद में उसे कैद में रखनेवाले को तंग कराने के लिए भूत बन जाती है । कभी-कभी औरत के दो रुप भी होते हैं । अमृतलाल नागरजीने ऐसे दोहरे रुपधारी औरत का चित्रण 'सूखी नदियाँ' कहानी में किया है । इस कहानी की नायिका को अपने पति माईकेल के गुजर जाने का गम भी है और साथ ही साथ उसे दूसरे व्यक्ति के साथ की जरुरत भी है । इसलिए वह सहानुभूति दर्शानेवाले का दिल भी नही तोड़ना चाहती । अर्थात अपने स्वार्थ के लिए भी तैयार हैं ।

पर निंदा नही करना चाहिए । परनिंदा करने से पाप लगता है इस प्रकार की बात कहनेवाली स्त्री स्वयं ही परनिंदा करती भी है और 'किसी से मत कहना' का मंत्र जपती चली जाती है । अभी अभी जिसने यह स्वीकार किया है कि परनिंदा करना बुरी बात है परंतु वह किस औरत के बारे में कुछ बतानी चाहती है तो उसकी स्थिति कैंसी हो जाती है, इस बात का वर्णन अमृतलाल नागरजीने अपनी कहानी 'परनिंदा' मे किया है। " श्रीमती श्यामकली देवी के पेट में किशोर की घरवाली द्वारा सुनाई गई रामसरुप के घर की निंदा बेपचे अन्न सी उबल रही थी । लेकिन परनिंदा से ताजे बखाते हुए पाप के कारण उन्हे अपनी बात कहने के लिए चूकी कोई दंग नही सूझ रहा था ।" [21]

स्त्रीपर होनेवाले अन्याय, अत्याचार का वर्णन नागरजीने 'शकीला की माँ' कहानी में किया है ।"शकीला सचमुच फिर भाग गयी थी । एक दिन, दो दिन, महिना डेढ़ महिना कुछ पता न ही , जमीलन के लिये धरती जैसे उसकी धकीला को निगल गयी थी । वह दरोगा जी की खिदमत में गयी हवालदारों को पाशविक मनोवत्तियों की छाप गालों और..... और अनवत स्तनोंपर लगाकर लौट आयी, परंतु शकीला न आयी, न आयी ।"[22]

इस प्रकार अमृतलाल नागरजीने औरत के कई रुपों को दर्शाया है। । कई रुपों के चित्रण के साथ साथ उसकी अलग अलग प्रवृत्तियों को भी उन्होंने चित्रित किया है । कुछ औरतों की बुरी प्रवृत्ति की वजह से पूरी औरत जात बदनाम होती है । लेकिन कुछ स्त्रियाँ ऐसी भी होती है जो संघर्ष कर, अपना आत्मसम्मान छीन भी लेती है ।

**डाक्टरों की दयनीय स्थिति का अंकन :-**

आधुनिक काल में जैसे जैसे शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार बढ़ता जा रहा हैं, विद्यार्थियों की रुचि अधिकतर डाक्टरी पेशे को अपनाने की ओर रही हैं । इसमें कमाई अच्छी होती है, यही एक मात्र महत्वपूर्ण भावना इसके पीछे काम कर रही है । इसी वजह से आज बडे बडे शहरों में एक ही रास्ते में एक ही विभाग में कई डाक्टर एक साथ अपने अस्पताल खोलकर बैठे हैं और कमाई किसी की भी ठीक नही हो रही है । डाक्टरों की स्थिति इतनी भयानक हो गयी है कि उन्हें मरीज को रिझाकर अपना यहाँ बूलाना पडता है । लोगों को आकर्षित करने के लिए नयी नयी खुशामते करनी पडती हैं । उनकी स्थिति कितनी दयनीय हो गयी है, यह बात

हम अमृतलाल नागरजी की कहानी 'डाक्टरी साईन बोर्ड' में देख सकते है - " पुराने साईनबोर्ड की पापडियां उखड जाने के कारण इनकी डिग्रिया पहले ही गायब हो चुकी थी । बाद में इनका कम्पाऊंडर राम इनकी बची खुची अच्छी दवाएं औ स्टेथेस्कोप लेकर गायब हो गया ।"[23]

अपने मरीजों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए डाक्टर लोग क्या क्या नहीं करते । परंतू मरीज तो उन्ही के पास जाना चाहते हैं, जो अच्छे डाक्टर हैं । एक डाक्टर तो ऐसे ही है जो " बेकारी दूर करने के लिये उपाय सोचे जाते । डाक्टर मक्खनलाल रोज अपना फर्निचर ही बदला करते जिससे कि शो अच्छा हो जाए मगर शो न बन सका ।"[24] 'रोजमरहि' कहानी में आया यह वर्णन यथार्थ स्थितिका अंकन करता है । कभी कभी इन डाक्टरों की आर्थिक स्थिति से मजबूर होकर उनकी पत्नियां उन्हें छोडकर भी चली जाती है । जैसे ---"इसके अतिरिक्त अपनी पढ़ी लिखी पत्नी की क्रूरता को खास तौर पर रोया करते है, जो अपने तीन बच्चों को लेगर गाजिया बाद के एक कॉलेज में प्रिंसिपल होकर चली गई । कई वर्ष हो गए, न वह आई और न पत्रों के उत्तर दिए और न बच्चों को ही कभी भेजा । डाक्टर फर्निचर पलट ही स्वयं दो बार मिल आए है, परंतु प्रिसिपल साहबा डाक्टर साहब का तख्ता पलट देती है । दोनों बार बच्चों के साथ दोहपर में भोजन करा दिया, चार बजे बाप- बेटे बेटियों को चाय पिला दी और रात को तांगा और रेल टिकट मंगाकर चपरासी के द्वारा डाक्टर साहब का बिस्तर गोल कर दिया ।"[25]

' रोजमरहि ' कहानी में एक डाक्टर लॉटरी का टिकट निकालता है और इस आशा के साथ कि उसे लॉटरी लगेगी ही, वह अपनी पत्नी से झूठ मूठ ही

कह देता है कि उसे नौकरी लग गयी है । महिने भर बाद जब उसकी पोल खुल जाती हैं, तो अपने आप को वह अपनी पत्नी के सामने अपना मुहँ दिखानेके काबिल नही समझता ।

इस प्रकार आज कल डाक्टरों की स्थिति किस प्रकार दयनीय हो गयी है, इस बात का यथार्थ अंकन अमृतलाल नागरजी ने किया है ।

**आधुनिक कालीन भक्तों की झूठी भक्ति का चित्रण :-**

आधुनिक काल में लोगों की ईश्वर के प्रति श्रध्दा बहुत कम हो गयी है । सिर्फ उनकी भक्ति किसी चीज को माँगने और ईश्वर को भी लालच दिखलाने की रह गयी है । उनकी ढोंगी भक्ति को आज हम समाज में सभी ओर देख सकते है । धर्म के नामपर लोगों को भड़काना यह तो मानो आम बात हो गयी है । इसी वजह से मनुष्य अपनी इन्सानियत खोता जा रहा है । अमृतलाल नागरजीने अपनी कहानी आदमी नहीं ! नहीं ! कहानी में इस बात का चित्रण किया है ।

बड़ी-बूढी स्त्रियां जब शाम को भजन के लिए इकट्ठा हो जाती हैं तो भजन तो दूर रहा आपस में एक दूसरी की निंदा करने लगती हैं । उनकी भक्ति में कितना ढोंग है यह बात हम इस बात से जान सकते हैं । जैसे, --- "अरे, उसकी एक आँख में भगवान की दी हुई रोशनी है और दूसरी में बाप के लाखों की माया चमकती है । भाभी उसे माया में तो लुभाई है"[26] 'मायामोह' कहानी में आये इस बातको तब कहा जाता है जब श्यामकली देवी की कानी लडकी को अपनी बहू बनाने के लिए तैयार हो जाती है ।

इस प्रकार आधुनिक भक्तों की ढोंगी भक्ति का पर्दाफाश करने का काम अमृतलाल नागरजीने किया है ।

**सामाजिक यथार्थ का चित्रण** :-

अमृतलाल नागर मूलतः सामाजिक यथाविादी लेखक होने से उनकी बहुतसी कहानियां सामाजिक यथार्थपर आधारित मिलती है । साहित्य समाज का एक अंग होता है । अमृतलाल नागरजी एक जगह करते है -- " यह सच है कि इस संग्रह की अधिकांश रचनाएं फरमाइशी उत्पादन है, मगर यह भी सच है कि जब तक किसी देखी सुनी या भोगी हुई घटना बात या किस चरित्र के ईर्द गिर्द मेरा उल्लास सहज भाव से नही मंडराने लगता तब तक फरमाइशो का सम्मान और लालच भी धरा ही रह जाता है ।"[27]

मध्यमवर्गीय लोगों के जीवन में चित्रित उनकी भाषा, संस्कृति रुढ़ियां एवं मानवीयता को यथासत्य रुप में स्पष्ट करनेका प्रयास किया है ।उनकी सामाजिक कहानियों में 'शकीला की मां,' 'जंतर मंतर,' 'मरघट के कुत्ते,' 'हाजी कुल्फीवाला,' 'खटकिन भाभी', नजीर मियां, कयामत का दिन,' 'मल्का टुरिया का बेटा," इन कहानियों में सामाजिक यथार्थ का चित्रण हुआ है । 'शकीला की मां' इस कहानी में वेश्या व्यवसाय करनेवाली स्त्रियों का सामाजिक यथार्थ चित्रण हुआ है । 'हाजी कुल्फीवाला,' 'खटकिन भाभी," 'नजीर मियां' इन कहानियों में निम्नवर्गीय जीवन बितानेवाले लोगों के सामाजिक स्थिति का चित्रण किया है । ' कयामत का दिन ' जंतर मंतर एवं 'मरघट के कुत्ते' में लोगों के धार्मिक जीवन का यथार्थ चित्रण स्पट किया है । प्रेमचंद के बाद उनकी सामाजिक यथार्थ कहानियां और भी दृढ़ हो गयी । प्रेमचंद की तरह नागरजी समाज

में चित्रित सामाजिक विसंगतियों एवं विकृतियों पर व्यंग्य करते हैं । डा.प्रमिला अग्रवाल के अनुसार "प्रेमचंद के बाद उनकी परम्परा में ही कुछ अधिक मनोवैज्ञानिक सचेष्टता लेकर सामाजिक अध्ययन की जागरुकता नागरजी में दिखाई पडती है । अपनी विशिष्ट शैली में उन्होंने सामाजिक विसंगतियों एवं विकृतियोंपर मर्मान्तक व्यंग्य किये हैं ।"[28]

इस तरह सामाकि यथार्थ का चित्रण भी नागरजी की कहानी साहित्य में उभरा हुआ दिखाई पडता है ।

**अन्य विशेषताएं :-**

अमृतलाल नागरजी की कहानियों में उपर्युक्त विशेषताएं तो हैं ही साथ ही साथ अन्य भी कई विशेषताएं देखनेको मिलती है जिन्हें हम किसी विशेष कोटि में डाल नहीं सकते ।

आधुनिक काल में युवाओं की मनोवृत्ति किस प्रकार स्वार्थी हो गयी है इस बात को दर्शाती अमृतलाल नागरजी की कहानी 'मल्का टूरिया का बेटा' है । इसमें बाप की संपत्ति मिल जाने के बाद उसे किस प्रकार पिटा जाता है, घर से बाहर निकाला जाता है, इस बात का वर्णन मिलता है । लेकिन उसे काई न कोई आश्रयदाता मिल ही जाता है । चोरी करनेवालों में भी अलग प्रवृत्ति होनेवाले एक चोर का वर्णन 'गिरहकट' कहानी में आया है जो पाकिटमार होते हुए भी आधे पैसे वापर कर देता है ।

एक देशभक्त देश के लिए स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लेता है और जेल में चला जाता है । जेल से वापस लौटने पर उसकी जयजयकार की जाती है ऐसा ही एक देशभक्त है क्रांतिकारी शिवनाथ तो जेल से वापस लौटनेपर जय जयकार का हकदार तो बन जाता है परंतू जब वह घर आता है तो देखता है - -" आझादी की खुशी और बच्चे की मौत एक साथ आयी थी । यकायक कुछ न सूझा तो पूछा ' क्या बिमारी हुई थी ? एकटक स्वामी की आंखों से आंख मिलाई, भावशून्य स्वर में धीरे से कहा- 'गरीबी' ।"[29] अमृतलाल नागरजी की सबसे महत्वपूर्ण कहानी 'एटम बम' में हिरोशिमा और नागासाकी पर गिरे बम से उत्पन्न बिगडी स्थिति का वर्णन किया गया है ।

" डाक्टरने कहा – क्यों नही बादशाह और वजीर हार मान लेते ? क्या अपनी झूठी आज के लिए वह जापान को तबाह कर देंगे उन्हें दुश्मनोंपर भी गुस्सा आ रहा था इन्हैं क्यो मारा गया ? ये किसी के दुश्म नही थे । इन्हे अपने लिये साम्राज्य की चाह न थी । मगर इनका अपराध है तो केवल यही की यह अपने बादशाह के मजबूरन बनाए हुए गुलाम है । व्यक्ति की सत्ता के शिकार है । संस्कारों के गुलाम है । ..... दुश्मन इन्हें मारकर खुश है । जापान की निर्दोष और मूक जनता ने दुश्मनों का क्या बिगाडा था जो उनपर एटम बम बरसाये गये ? विज्ञान विज्ञान की नयी खोज की शक्ति आजमाने के लिए उन्हें लाखों बेजबान बेगुना है, की जान लेने का क्या अधिकार था ? क्या यह धर्मयुध्द है ? .... सदादर्शो के लिए लडाई हो रही है ।"[30]

'हाजी कुल्फीवाला' कहानी में एकाध व्यक्तिकी कला का महत्व कितना हो सकता है यह दिखाया है तो दूसरी ओर 'नजीर मियां' कहानी में दूसरों के काम करने में घर के कामों को भूलनेवाले अधर्म का चित्रण किया गया है । पहले जमाने में अध्यापक कैसे होते थे, उनका गुस्सा कैसा होता था इस बात को चित्रित करती अमृतलाल नागर की कहानी 'मेरे आदि गुरु' में गुरु के प्रति श्रध्दा कैसी होती थी इस बातका वर्णन किया गया है - " फैलाने और फलाना अगर एक आवाज में ने बोला तो खैर नहीं । इसी बुरी तरह घुनते थे कि देखनेवालों को दर्द लगता था। लडकोंके माता पिता मारपीट के सम्बन्ध में कुछ नही कह सकते थे । विद्यार्थी को पढ़ाने से पहले उसके अभिभावको से मारपीट की शर्त वे तय कर लेते थे । छडी लागे छम छम और विद्याआवे धम धम के सनातन सिध्दान्त में उनका अटूट विश्वास था ।"[31]

आधुनिक काल में बच्चे बडोंको धोखा देने की कोशिश में लगे रहते हैं । वे चोरी छिपे कुछ करना चाहते हैं, लेकिन बड़े कैसे फौरन पकड़ लेते हैं । अमृतलाल नागरजी की कहानी 'ब्रिटीश राज्य का तिलस्मी दरवाजा' में भी यही स्थिति है । इस कहानी का नायक चोरी छिपे तिलस्मी किताबे पडता है और पकडा जाता है छोटे बच्चों का बालसुलभ आपसी प्रेम दिखती कहानी 'बेबी की प्रेम कहानी' है । भीड एक बार जो बात ठान लेती है, वह सभी के मनवाकर ही छोड़ती है । 'कयामत का दिन' कहानी का नायक उसे जो सपना आया था, कयामत के दिन के बारे में अल्लाह बयान करना चाहता है, इस बात को वह बताना चाहता है लेकिन लोग समझते हैं कि गुरुए वस्त्र धारण कर वह अपनी बीवी के साथ झगड़े के कारण संन्यास लेकर आ रहा है । इस बात से क्रोधित होकर व बहुत कुछ कहता है लेकिन लोग सुनते ही नहीं । उसकी हालत दयनय हो जाती है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमृतलाल नागरी की कहानियां कई विशेषताएं लिए हुए हैं । इन सभ विशेषताओं के साथ ही साथ अन्य भी कई शिल्पगत विशेषताएँ अमृतलाल नागरजी की कहानियोमें हैं । उन विशेषताओं को देखे बगैर यह विषय अधूराही रह जाएगा । शिल्पगत विशेषताओं के अंतर्गत हम तत्वोंके अनुसार स्थूल रुपमें देख सकते हैं ।

**शिल्पगत विशेषताएं :-**

शिल्प की दृष्टिसे अगर अमृतलाल नागरजी विशेषताओं की चर्चा अगर हमें करनी है तो उसके पहले कथानक, चरित्र चित्रण देश - काल - वातावरण, कथोपकथन आदि सभीकी दृष्टिसे विशेषताओं का अनुशीलन करना जरुरी है ।

कथागत विशेषताएं :-

अमृतलाल नागरजी की कहानियों की कथावस्तुकी कई विशेषताएं हैं उनकी कहानियां अत्यंत संक्षिप्त, सीधी सरल भाषामें लिखी हुई हैं । कथावस्तु में सरलता, रोचकता आदि कई विशेषताएँ देखी जा सकती है । कहानी की कथावस्तुएँ अत्यंत संक्षिप्त है । अधिकतर लखनवी वातावरण कहानी की कथावस्तु में देखा जाता है । अमृतलाल नागर की कहानियां कथावस्तु की सभी विशेषताएं लेकर चलती हैं । कथानक में आरम्भ, विकास और चरम सीमा ये तीनों ही प्रकार देखनेको मिलते हैं । लखनवी वातावरण में नवाबों का उनके अन्य चमचोंका या स्तुति पाठकों का उनकी विलासी वृत्तियों का वर्णन भी इन कहानियों में आया है । अन्य भी कई प्रकारकी

कहानियां उन्होंने लिखी है, जिनमें समाज की कई समस्याओं का उदघाटन उन्होंने सफलता के साथ किया है ।

अमृतलाल नागरजीकी कहानियों की कथावस्तु में भाषा की द्रुष्टी से लखनवी भाषा के अनुसार उर्दू मिश्रीत भाषा देखनेको मिलती है । नागरजी की कहानियां अत्यंत संक्षिप्त है बहुत बडी कहानियां इन्होंने नहीं लिखी है । अमृतलाल नागर की कहानियों का कथानक देखनेपर ऐसा महसूस होता है, कि अमृतलाल नागरजीने जिस प्रकार किसी खास समस्याओं के उद्घाटन हेतु उपन्यासों का सृजन किया उन उद्देश्यों से अमृतलाल नागर ने कहानियां नही लिखी । कुछ कहानियों का कथानक तो सिर्फ छोटे बच्चों के लिए लिखी गयी कहानियों की तरह लगता है ।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अमृतलाल नागरकी कहानियोंका कथानक सिर्फ मनोरंजन के लिए लिखा गया है, चाहें वह कितनी ही सरल, सहजभाषा में लिखा क्यों नगया हो । उमें कौतूहलवर्धकता, रोचकता भलेही हो उपन्यासों की तुलना में उनकी कहानियोंका कथानक थोडासा डगमगा ही गया है ।

**पात्र चरित्र चित्रण :-**

अमृतलाल नागरजी ने अधिकतर कहानियों में लखनवी वातावरण को चित्रित किया है, इसी वजह से उनकी कहानियोंके पात्र अधिकतर नवाब उनके चमचे आदि ही है । परंतु इसके साथ ही साथ कुछ ऐसे पात्रों का निर्माण भी उन्होंने किया है, जो चरित्रिक विशेषताएं लेकर तो नही चलते परंतु समाज में ऐसे व्यक्ति होते हैं और सहज समाज का एक अंग होते हैं । उन पात्रों से कोई खास कार्य नही होता, उनका होना न होना भी बराबर ही होता है । ऐसा महसूस होता है कि नागरजीने

ऐसे पात्रोंका सृजन सिर्फ समाज में होते हैं और उनकी ओर किसी का ध्यान नहीं जाता । । वे कहानियां कहानियां न होकर सिर्फ रेखाचित्रे की तरह लगती हैं । ऐसी कई कहानियां नागरजीने लिखी है जैसे 'हाजी कुल्फीवाला,' 'खटकिन भाभी,' 'नजीर मियां,''हमारे पडोसी मुन्शी,''बखतावरलाल,''मुन्शी धिर्राऊलाल आदि ।

अमृतलाल नागर की कहनियेां में सिर्फ ऐसे ही पात्र नहीं है जो प्रवृत्तियों के द्योतक हैं तो अन्य भी कई तरह के पात्र इसमें आये हैं । स्त्रियों की मनोवृत्तियों को, समाज की कुछ समस्याओं को दर्शाने के लिये भी अलग-अलग तरह के पात्रों का निर्माण लेखक ने किया है । समाज की कई कुप्रवृत्तियों को दिखाने के लिए जिन कहानियोंका सृजन नागरजीने किया है, उनमें भी अलग-अलग तरह के पात्र चित्रित किये गये हैं । नागरजीकी कहानियों की नायक सामान्य से सामान्य आदमी हैं । जिनकी ओर किसीका ध्यान नही जा सकता । ऐसे सामान्य व्यक्तियों को लेकर लिखी इन कहानियों की वजह से ही अमृतलाल नागर अन्य कहानीकारों से अलग दिखाई पडते हैं ।

**संवाद** :-

यही एक तत्व है जिस में नागरजी को सफलता मिली है । उन्होंने लखनवी बोली का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है । उनकी कहानियोंके पात्र कई तरह की बोलियाँ बोलते हैं । उनके द्वारा लिखे गये संवादों में सरलता, रोचकता, माधुर्य, कौतूहलवर्धकता हैं । इन संवादो की वजह से ही कथानक में गतिशीलता, उत्सुकता, सरसत आ गयी हैं । इन कहानियों के संवाद अंत्यत संक्षिप्त हैं । कही भी गंभीर, बहन भाषा

का या संवादों का प्रयोग न होने के कारण इनमें कही भी नीरसता नहीं आयी है । पाठक के मन में यह उत्सुकता हमेशा बनाये रहती हैं कि, आगे क्या होगा ? ये संवाद अत्यंत सीधी, सरल भाषा में लिखे जाने के कारण सहज बोधगम्य बन पडे हैं।

उनकी कहानियों का संवाद तत्व यह एक महत्वपूर्ण विशेषता बन जाता है इन कहानियों के संवाद अगर इतने सरस, सुंदर न होते, जटिल या गहन, गंभीर होते तो ये कहानियाँ पाठकों को अच्छी नहीं लगती ।

नाटकीयता इनकी कहानियों की संवादों की महत्वपूर्ण विशेषता है । इसी नाटकीयता के कारण शायद ये कहानियाँ पढ़ने में इतनी रुचि उत्पन्न होती हैं । सिर्फ संवादो की सफलता के कारण ही उनकी कहानियाँ बहुत सुंदर लगती हैं । इसप्रकार संवाद तत्व की सफलता यह एक मात्र विशेषता अमृतलाल नागरजी की कहानियों की महत्वपूर्ण विशेषता है ।

**देश - काल तथा वातावरण :**

लखनऊ जैसे विलासी शहर में जीवनभर रहने वाले अमृतलाल नागर ने अगर वहीं के वातावरण को अपनी कहानियों में चित्रित किया हो, तो कोई आश्चर्य नहीं लखनऊ का वातावरण ही एक तो रंगीन है, वहीं के वातावरण में पले-बढ़े नागरजीने यह सारी रुमानियत अपनी कहानियों में उतारी है । लखनऊ के जीवन के कई रंगों को उन्होंने अपनी कहानियों में चित्रित किया है । जैसे - उन्होंने लखनऊ के जीवन का महत्वपूर्ण अंग होनेवाले ' चौक ' का वर्णन कई कहानियों में किया है ।

लखनऊ के पर्व, त्यौहार, मेले, वहाँ के लोकगीत, वहाँ की रुढ़ियाँ, प्रथाएँ, परम्पराएँ , खानपान, वहाँ के लोगों की वेशभूषा, वहाँ के लोगों की बोलचाल, वहाँ के तौर-तरीके आदि सभी का वर्णन अमृतलाल नागरने अपनी कहानियों में किया हुआ दिखाई देता है । वे इस लखनऊ शहर से इतने खुश हैं कि उनका पूरा एक कहानी संग्रह ' नवाबी मसनद ' लखनऊ के जीवन को दिखानेवाला कहानी संग्रह है । इस संग्रह की सभी कहानियाँ नवाबी जीवन को दर्शाती हैं । उनका एक और कहानी संग्रह ' हम फिदाए लखनऊ ' भी उनका ' लखनऊ ' भी उनका लखनऊ के बारे में प्रेम ही दर्शाता है ।

इसके साथ ही इसी प्रकार लखनऊ के जीवन की या नवाबों के जीवन का चित्रण करनेवाली कहानियाँ हैं -- ' नवाब साहब ', ' बनफशा बेगम के नूरे नजर', ' लखनऊ होली ' आदि । इस में पूरा का पूरा वातावरण यद्यापि लखनऊ का है फिर भी कहीं - कहीं अस्पताल, मरघट, जापान आदि जगहों का वर्णन भी उन्होंने सफलत के साथ अपनी कहानियों में किया है ।

**भाषाशैली** :

अमृतलाल नागर की कहानियों की सबसे महत्वपूर्ण बात अगर कोई है, तो वह है उनकी भाषा । उनकी कहानियों में आये पात्र, ब्रज, अवधी, उर्दू और अंग्रेजी मिश्रित हैं । इसी उर्दू और हिन्दी के बीच में कुछ लोगों का असंगत मत था । इसी को स्पष्ट करते हुए नागरजी कहते हैं, -- " हम हिन्दी का उर्दूकरण क्यों नहीं चाहते है । लेखक ने बहुत विस्तारपूर्वक उन भावात्मक सम्बन्धों की पृष्ठभूमि उद्घाटित की है जो उसमे और उर्दू के बीच बनी है । अवध की इस संस्कृति को

वह विरासत के रुप में सर्वत्र स्वीकार करता है । वर्षों उसने स्वयं तस्लीम लखनवी के नाम से कहानियाँ लिखी हैं जो लिपी भेद को छोडकर हिन्दी, उर्दू शैली की एकता का अपूर्व उदाहरण है । लेकिन फिर भी अनेक वैज्ञानिक और तर्क संगत कारणोंसे, एक सीमा के बाद लेखक हिन्दी का उर्दूकरण नहीं चाहता ।" [32]

लखनऊ वातावरण चित्रण के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था, पात्रों की बोली में उर्दू के शब्दों का प्रयोग । अपने पात्रों के मुखसे इसी प्रकार की बोली बुलवाकर अमृतलाल नागरजी ने भाषा की दृष्टि से सफलता हासिल की है । उनके लगभग सभी पात्रों के मुख में उर्दू शब्दों की भरमार हैं । चाहे कितना भी पडा लिखा व्यक्ति क्यों न हो, उसके मुख से नागरजीने लखनवी बोली बुलवाकर एक समासा बाँध दिया है । भाषा की दृष्टि से अमृतलाल नागर अत्यंत सफल दिखाई देते हैं क्योंकि उनकी भाषा लोगों को पाठकों को बांधकर रखती है । अलग - अलग तरह के पात्रों के मुख के अलग - अलग तरह की भाषा बोली दिखाई देती है । नागरजी ने जो भाषा इस्तेमाल की है, उसी की वजह से उनकी कहानियाँ सरस, रोचक बन गयीं हैं । भाषा की वजह से कहानियां पाठकों को आकर्षक लगती हैं ।

भाषा के विविध रुपों का, शब्दों के विविध रुपों का इस्तेमाल भी उन्होंने किया है । ब्रज, अवधी, उर्दू, अंग्रेजी के शब्दों के साथ-ही- साथ कई तत्समशब्द, अपशब्द, द्विरुक्त शब्द की भी इनकी कहानियों में आये हैं । उपमा रुपकविशेषण, कहावते, मुहावरे आदि का प्रयोग भी इनकी कहानियों मे दिखाई पडता है । लेकिन भाषा की दृष्टि से सफल होने के बावजूत भी इनकी कहानियाँ शैलीगत विशेषताएं लेकर नही चलती । उन्होंने अधिक तर संवादत्मक शैली का प्रयोग या नाटकीय

शैली का ही प्रयोग अपनी कहानियों में किया है । अन्य भी कई शैलीयाँ इनकी कहानियों में देखने को मिलती तो है परंतु उनका सफलता के साथ निर्वाह अमृतलाल नागरजी ने नही किया है, ऐसा महसूस होता है ।

जिस प्रकारके वातावरण का चित्रण उनहोंने अपनी कहानियों में किया है। । वातावरण के लिये उपयुक्त कई शैलीयों का प्रयोग अपनी कहानियों में अमृतलाल नागर कर सकते थे लेकिन अधिकतर नाटकीय शौली के प्रयोग के कारण अन्य शैलियों की संभावना ही नही रह जाती । अन्या जो शैलीयां उन्होंने प्रयुक्त की है, उससे उनकी कहानियां की शौलीगत विशेषता को बताना बहुत ही कठीन है । लेकिन जो नाटकीय शौली नागरजीने अपनी कहानियों मे प्रयुक्त की है, उसमें उन्हें सफलता मिली है । उसी की वजह से कहानियां सरस, सुंदर बन गयी हैं । इस प्रकार हम कह सकते है कि चाहे भाषा की दृष्टी से नागरजी सफल क्यों ना हुए हो या चाहे जितनी भाषागत विशेषताएं उनकी कहानियोंमे क्यों ना पाई जाती है, उनकी कहानियों में शैलीगत विशेषतां बिल्कुल ही दिखाई नही देती ।

**उददेश्य**

अमृतलाल नागरजी को अधिकतर कहानियां मनोरंजन के उददेश्य से भी लिखी प्रतित होती है । इसी वजह से उनकी कहानियों में उददेश्यागत विशेषताएं भी अधिक दिखाई नही देती उनकी कुछ कहानीयों में समाज की कुछ महत्वपूर्ण समस्याओं पर व्यंग्य किया है । उनका अधिकतर देश का वातावरण और भाषा की ओर ध्यान रहने के कारण उनका उददेश्य तत्व की ओर अधिक ध्यान नही रहा है । इसी वजह से उददेश्यगत विशेषताएं इनमें पायी नहीं जाती है ।

इस प्रकार अमृतलाल नागरजी की कहानियों में उपर्युक्त शिल्पगत विशेषताएँ हम देख सकते हैं ।

**निष्कर्ष** :-

निष्कर्ष रुपमें हम कह सकते हैं कि अमृतलाल नागरजी की कहानियां कई विशेषताओं से युक्त हैं । जैसे उनकी कहानियों में लखनवी जीवन के विविध अंगोंका चित्रण मिलता है । उनकी कहानियों पर गांधीवाद का प्रभाव देखने को मिलता है । उनकी कहानियों में भष्ट्राचार का यथार्थ एवं चापलूसी वृत्तिका चित्रण हुआ है । आजके लोगों में जो अफवाहें फैलाने की प्रवृत्ति दिखाई देती है, उसे भी उन्होंने चित्रित किया है ।

अंधश्रध्दा के विविध रुप, झूठी डिंगे हांकने की वृत्ति को लेखकने व्यंग्य के माध्यम से स्पष्ट किया है । इसके साथ साथ स्त्री के विविध रुपोंका चित्रण एवं डाक्टरों की दयनीय स्थितिका अंकन भी नागरजीने विशेषताओं के माध्यमसे स्पष्ट किया है । अन्य भी कई विशेषताएं अमृतलाल नागरजी - की कहानियेां में देखने को मिलती है, जिन्हें हम किसी विशेष कोटि में ड़ाल नहीं सकते । इसतरह नागरजी की साहित्यमें विशेषताओं का सृजन हुआ है ।

## संदर्भ सूची


1. चौबे देवेंद्र - कथाकार अमृतलाल नागर पृ. 166
2. वही पृ. 131
3. नागर अमृतलाल - नवाबी मसनद पृ. 16
4. नागर अमृतलाल - एटम बम पृ. 36
5. डा.सिनहा सुरेश - हिन्दी कहानी - उद्‌भव और विकास - पृ. 60
6. नागर अमृतलाल - नवाबी मसनद पृ. 42
7. वही पृ. 90
8. नागर अमृतलाल - सिंकंदर हार गया - पृ. 92
9. नागर अमृतलाल एटम बम - पृ. 17
10. वही सिकंदर हार गया - पृ.62-63
11. वही- पृ. 65
12. नागर अमृतलाल - हम फिदाए लखनउ - पृ. 13
13. वही - पृ. 75
14. नागर अमृतलाल - भारतपुत्र नौरंगीलाल पृ. 15
15. डा. सिनहा सुरेश - हिन्दी कहानी - उदभव और विकास पृ.65
16 नागर अमृतलाल - भारतपुत्र नौरंगीलाल - पृ. 38
17. वही पृ.47
18. शर्मा देवेंद्रनाथ सं. गोपालराय- हिन्दी साहित्य शब्दकोश - पृ. 117
19. नागर अमृतलाल - एटम बम - पृ. 38

20. डा. भुतडा घनश्याम - समाकालीन हिन्दी कहानियोंमे नारी के विविध रुप पृ. 8

21. नागर अमृतलाल - भारतपुत्र नौरंगीलाल - पृ. 68

22. मुदगल अवधनारायण सँ- सारिका - 16 से 31 अगस्त 1985 पृ. 14

23. नागर अमृतलाल - हम फिदाए लखनउ - पृ. 15

24. नागर अमृतलाल - पीपल की परी पृ. 17

25. नागर अमृतलाल - हम फिदा ए लखनऊ - पृ. 15.16

26. नागर अमृतलाल-भारतपुत्र नौरंगीलाल पृ. 61

27. वही पृ. 5

28. डा. अग्रवाल प्रमिला - भारत विभाजन और हिन्दी कथा साहित्य पृ. 81

29. नागर अमृतलाल - एटम बम - पृ. 70

30 वही पृ. 14

31. नागर अमृतलाल - पीपल की परी - पृ. 72

32. नागर अमृतलाल - साहित्य और संस्कृति - पृ. 55